गिनी मुर्गी ने कैसे पाईं चित्तियाँ

गिनी मुर्गी ने
कैसे पाईं चित्तियाँ
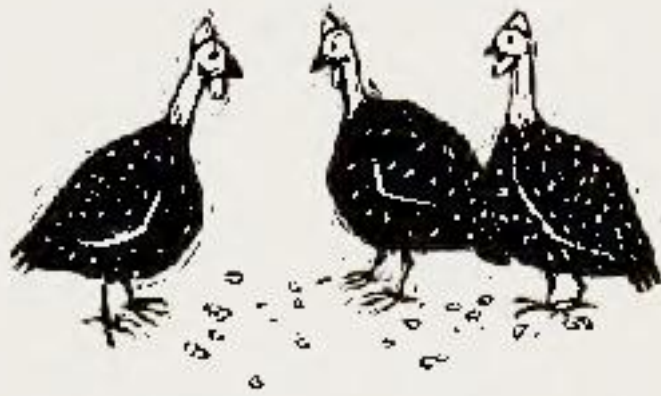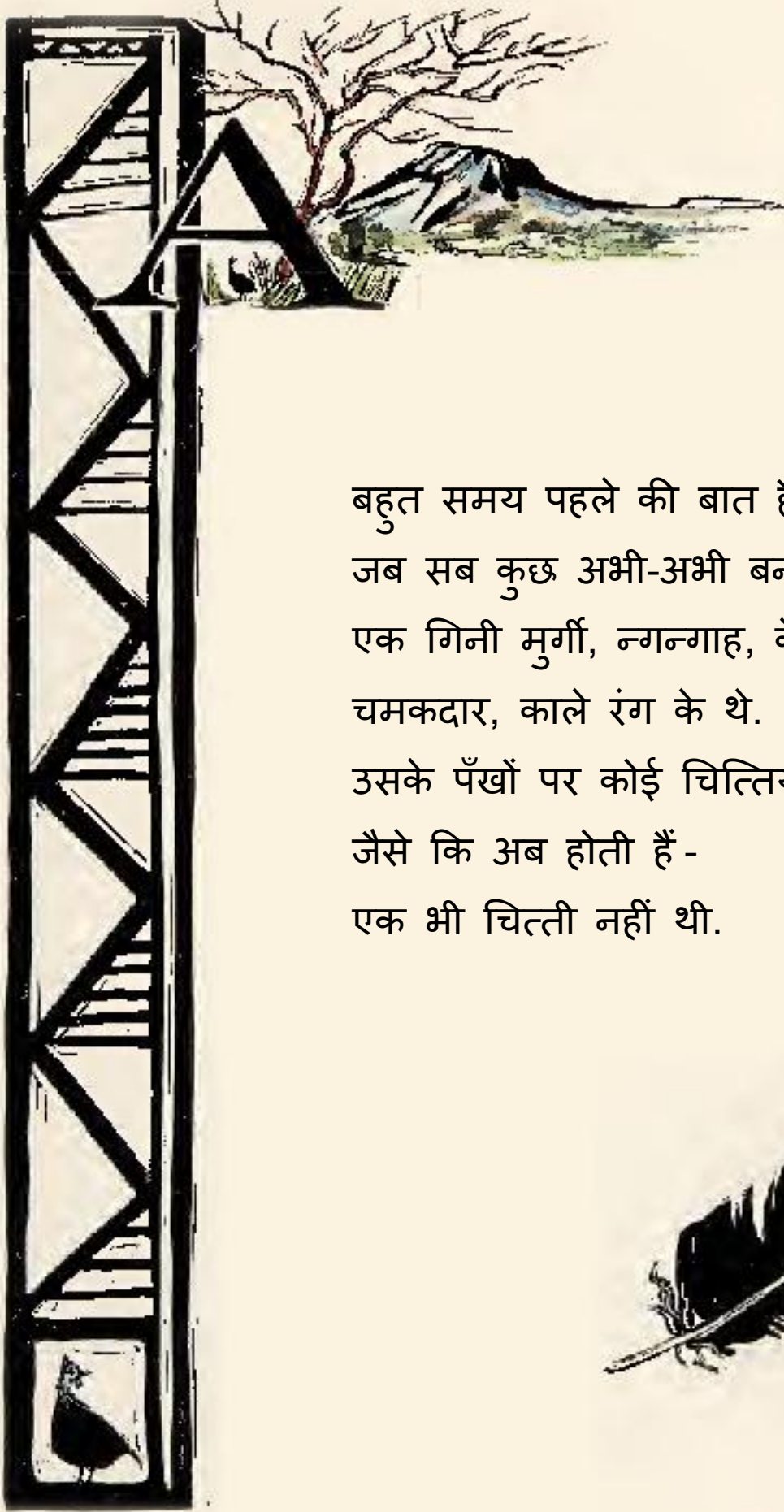
बहुत समय पहले की बात है
जब सब कुछ अभी-अभी बना था
एक गिनी मुर्गी, न्गन्गाह, के पँख
चमकदार, काले रंग के थे.
उसके पँखों पर कोई चित्तियाँ नहीं थीं,
जैसे कि अब होती हैं -
एक भी चित्ती नहीं थी.

गिनी मुर्गी छोटी सी थी, लेकिन
उसकी मित्रता एक बड़े पशु के साथ थी.
उसकी मित्र थी एक गाय.

दोनों को विशाल हरी पहाड़ियों पर
जाना अच्छा लगता था
जहाँ गाय घास खा सकती थी और
न्गन्गाह बीज चुन सकती थी
और टिड्डों को पकड़ कर खा सकती थी.

और दोनों सदा सतर्क रहते थे
कि कहीं शेर न आ जाये.

एक पहाड़ी पर गाय से मिलने के लिए
एक दिन गिनी मुर्गी नदी पार कर रही थी.
वहाँ की घास इतनी मीठी और स्वादिष्ट
थी कि गाय बेसब्री से जल्दी-जल्दी घास
काट कर, चबा रही थी. न्गन्गाह को नदी
में ही घास काटने और चबाने की आवाज़
सुनाई दे रही थी.
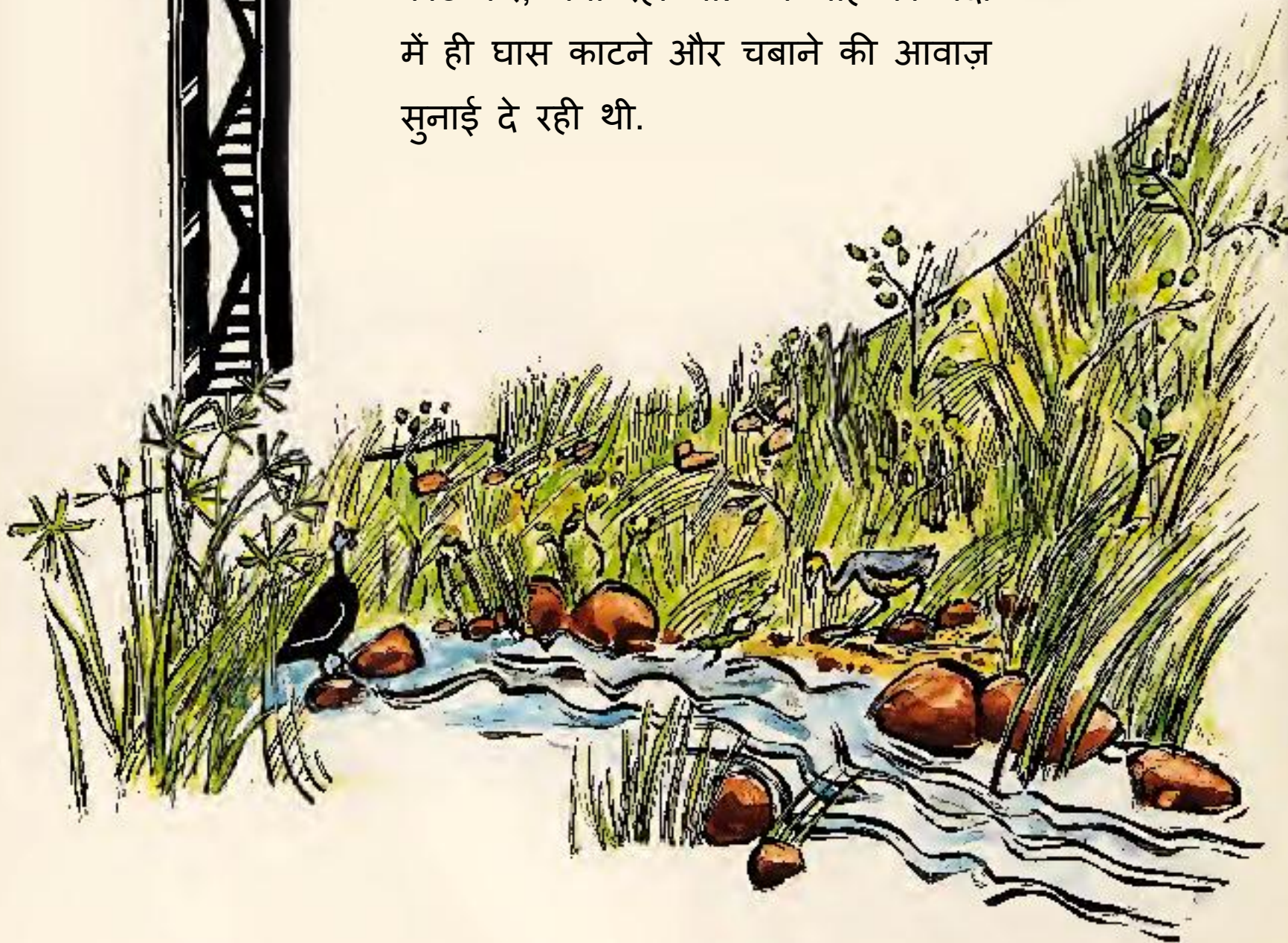
लेकिन....

वह क्या था जिसे
गाय की ओर चुपके से जाते हुए
न्गन्गाह ने देखा?

क्या वह कोई......?
हाँ, वह शेर था!

अब आपको लगेगा कि एक छोटी गिनी मुर्गी
शेर का सामना कैसे कर सकती है,
लेकिन न्गन्गाह ऐसा नहीं सोचती थी.
वास्तव में उसने कुछ भी नहीं सोचा.
जितनी तेज़ी से वह किनारे से ऊपर भाग
सकती थी उतनी तेज़ी से वह भागी और
धूल में पँख फड़फड़ाती और
ज़मीन पर पंजे रगड़ती हुई
फर्राटे से सीधे शेर और गाय के
बीच में आ खड़ी हुई.

“रअअअअफ!” शेर दहाड़ा.

“मेरी आँखें! यह रेत! यह क्या था?”

जब धूल का बादल थोड़ा छंटा,
वहाँ पर किसी का नामोनिशान न था-
निश्चय ही शेर को खाने के लिए कुछ न
मिला.
अपने खाली पेट समान गड़गड़ाता हुआ,
भयंकर क्रोध में, वह घर की ओर चल
दिया.
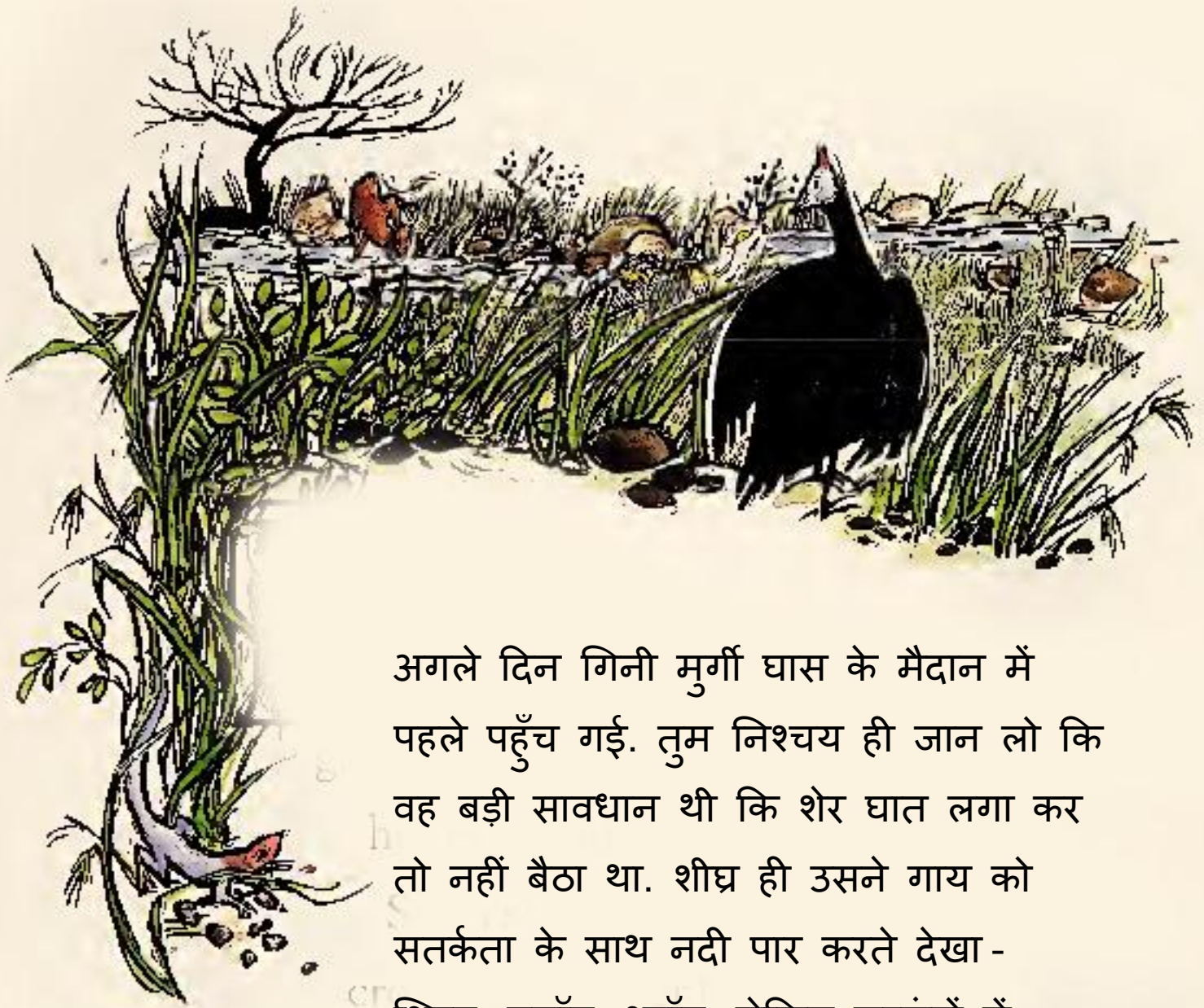
अगले दिन गिनी मुर्गी घास के मैदान में पहले पहुँच गई. तुम निश्चय ही जान लो कि वह बड़ी सावधान थी कि शेर घात लगा कर तो नहीं बैठा था. शीघ्र ही उसने गाय को सतर्कता के साथ नदी पार करते देखा - शिलप, क्लॉप, श्लॉप. लेकिन सरकंडों में कोई पीली चीज़ फड़क रही थी.
क्या वह शेर की पूँछ नहीं थी?

चीखती हुई न्गन्गाह ऊपर की ओर घूमी,
अपने कड़े पँखों से वह आधी उड़ी, आधी लुढ़की.
अपनी छिपने की जगह से
शेर ने ऊपर देखा,
वह भौंचक्का हो गया.
फर्रर्रर्रर्र....एक छोटा काला बवंडर
घास के ऊपर
नदी की ओर तेज़ी से आ रहा था.
“व्ही-क्लो-क्लो-क्लो!”
उसने चिल्ला कर गाय को कहा.

“गिनी मुर्गी! कल इसी के कारण
धूल का अंधड़ आया था,”
अपने नुकीले दाँत दिखाते हुए वह गुर्राया.
अगले पल बवंडर नदी से आ टकराया.
“रअअअअफ!” शेर गुस्से से दहाड़ते हुए कूदा
और तुरंत अपने को
जलमग्न पाया.

“गाय को भगाने के लिए इस पक्षी को मैं अच्छा सबक सिखाऊँगा!”

वह बड़बड़ाया. लेकिन जब तक वह दुबारा ज़ोर

से दहाड़ पाया,

गाय और गिनी मुर्गी सुरक्षित दूसरी पहाड़ी पर स्थित गाय के घर पहुँच चुके थे.
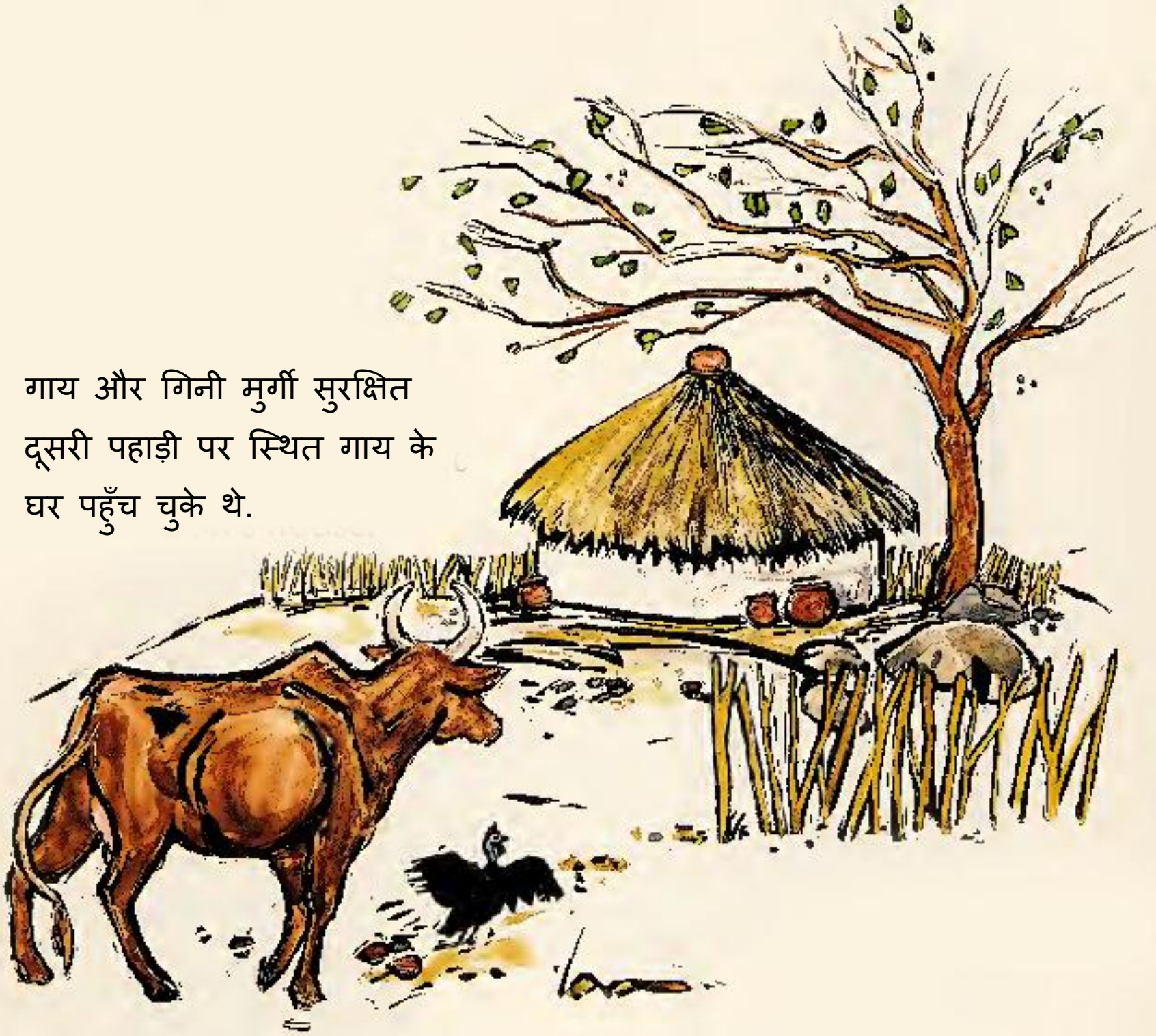
“न्गन्गाह,” कृतज्ञ गाय ने प्यार से कहा,
“दो बार तुमने शेर से बचाया.
अब मैं तुम्हारे लिए वही करूँगी.”
उसने घूमकर अपनी गुच्छेदार पूँछ
दूध से भरे मटके में डुबो दी.
फिर दूध में भीगे पूँछ के गुच्छे को
गिनी मुर्गी के काले, चमकदार परों पर
झटक दिया-फ्लिक, फ्लॉक, फ्लिक-
और मलाईदार दूध
उस पर छिड़क दिया.

गिनी मुर्गी ने अपनी गर्दन को घुमाया
और पीठ पर बनी सुंदर सफेद चित्तियों को
प्रशंसा से देखने लगी.

गिनी मुर्गी ने अपने पँख फैला दिये

और गाय ने उन पर भी दूध छिड़क दिया -
फ्लिक, फ्लॉक, फ्लिक
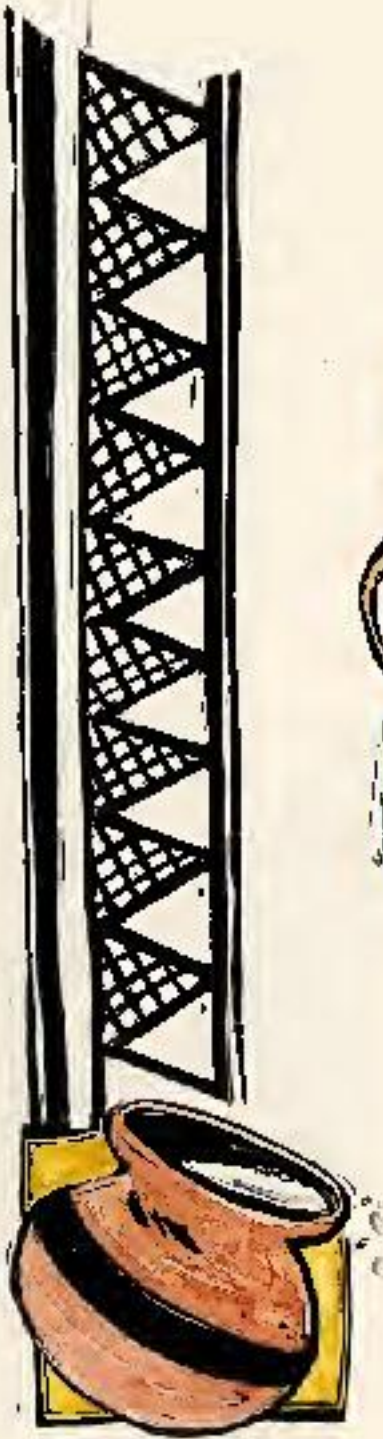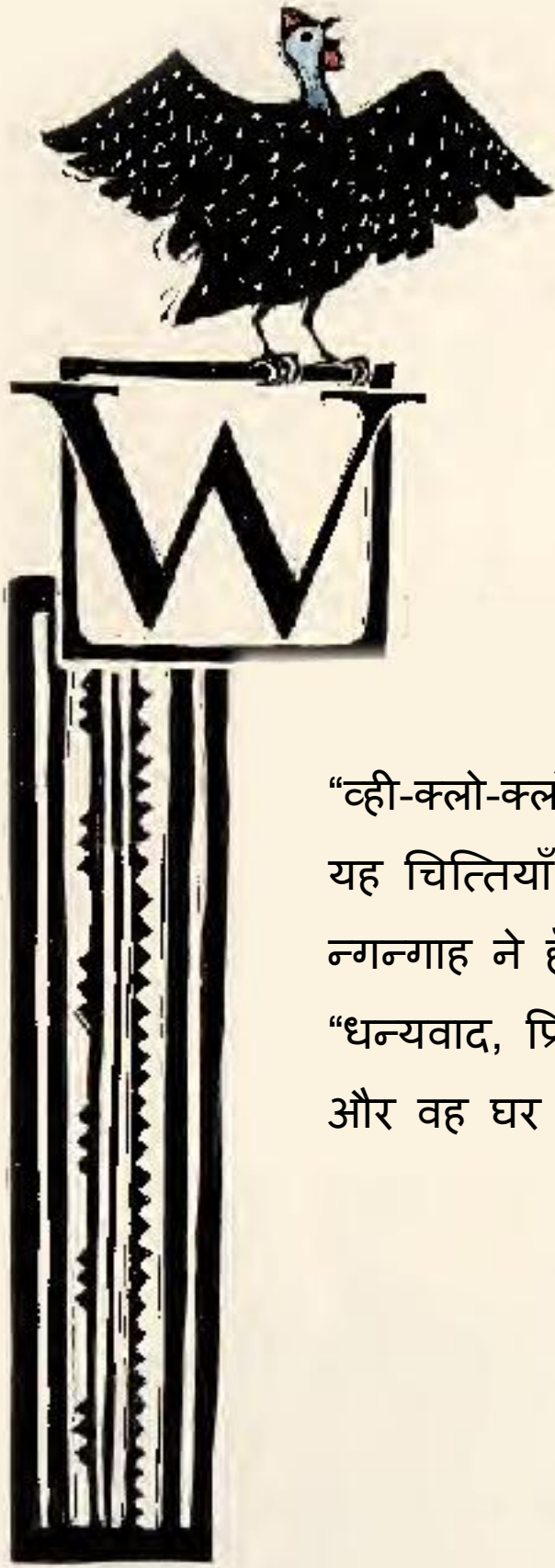
“व्ही-क्लो-क्लो!
यह चित्तियाँ तो बहुत सुंदर हैं, गाय!”
न्गन्गाह ने हँसते हुए कहा.
“धन्यवाद, प्रिय मित्र!”
और वह घर की ओर चल दी.

और जिस जगह वो रास्ता नदी से मिलता था
वहाँ उसका सामना किस से हुआ?
शेर से, जो अभी भी वहाँ खड़ा
सिर को झटक कर कानों से पानी
निकाल रहा था और
पहले से भी अधिक गुस्से में था.
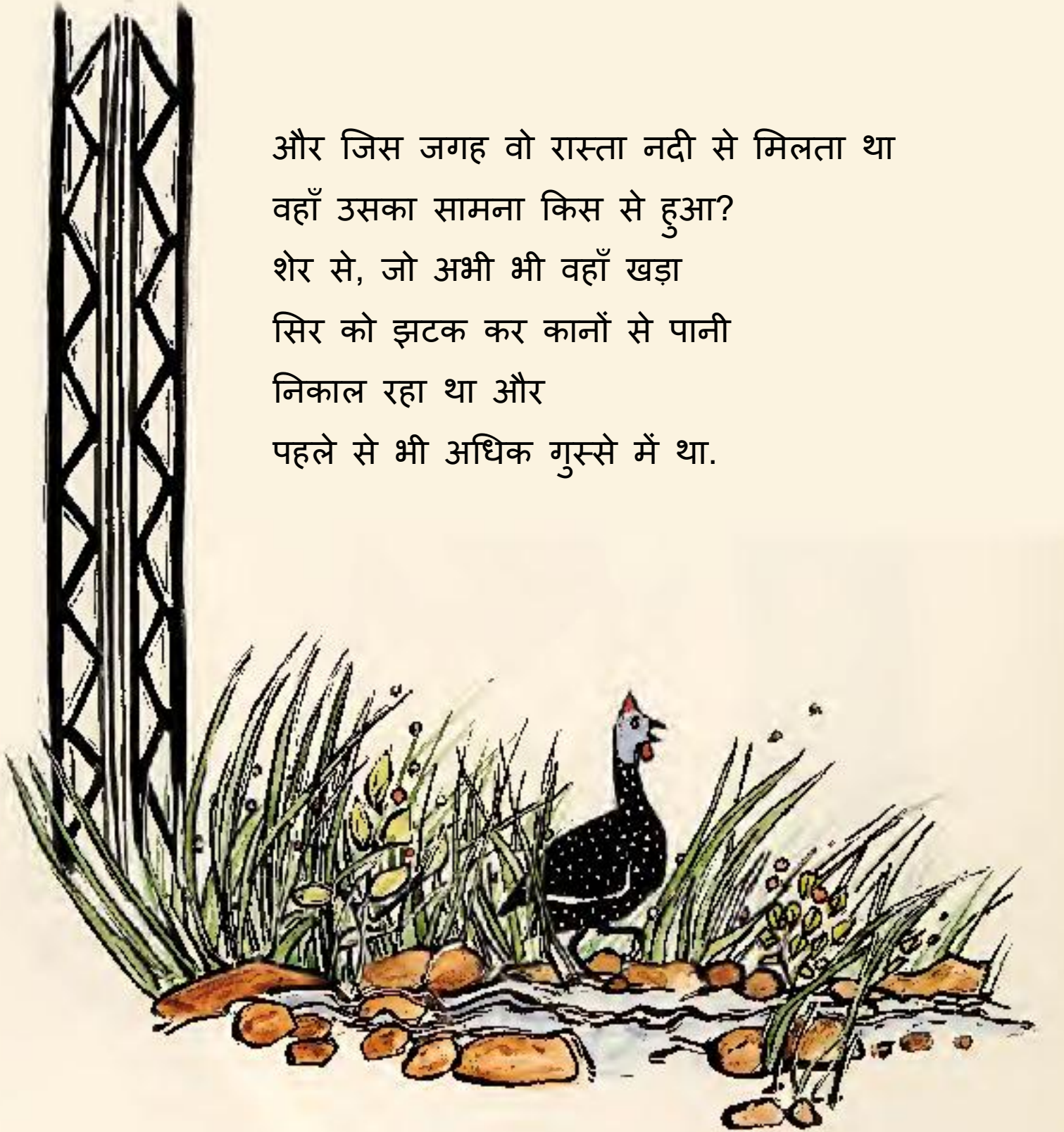
“हो, चित्तीदार पक्षी!”
शेर ने चिल्ला कर कहा.
“क्या तुम ने अपने रास्ते में
गिनी मुर्गी को देखा?”
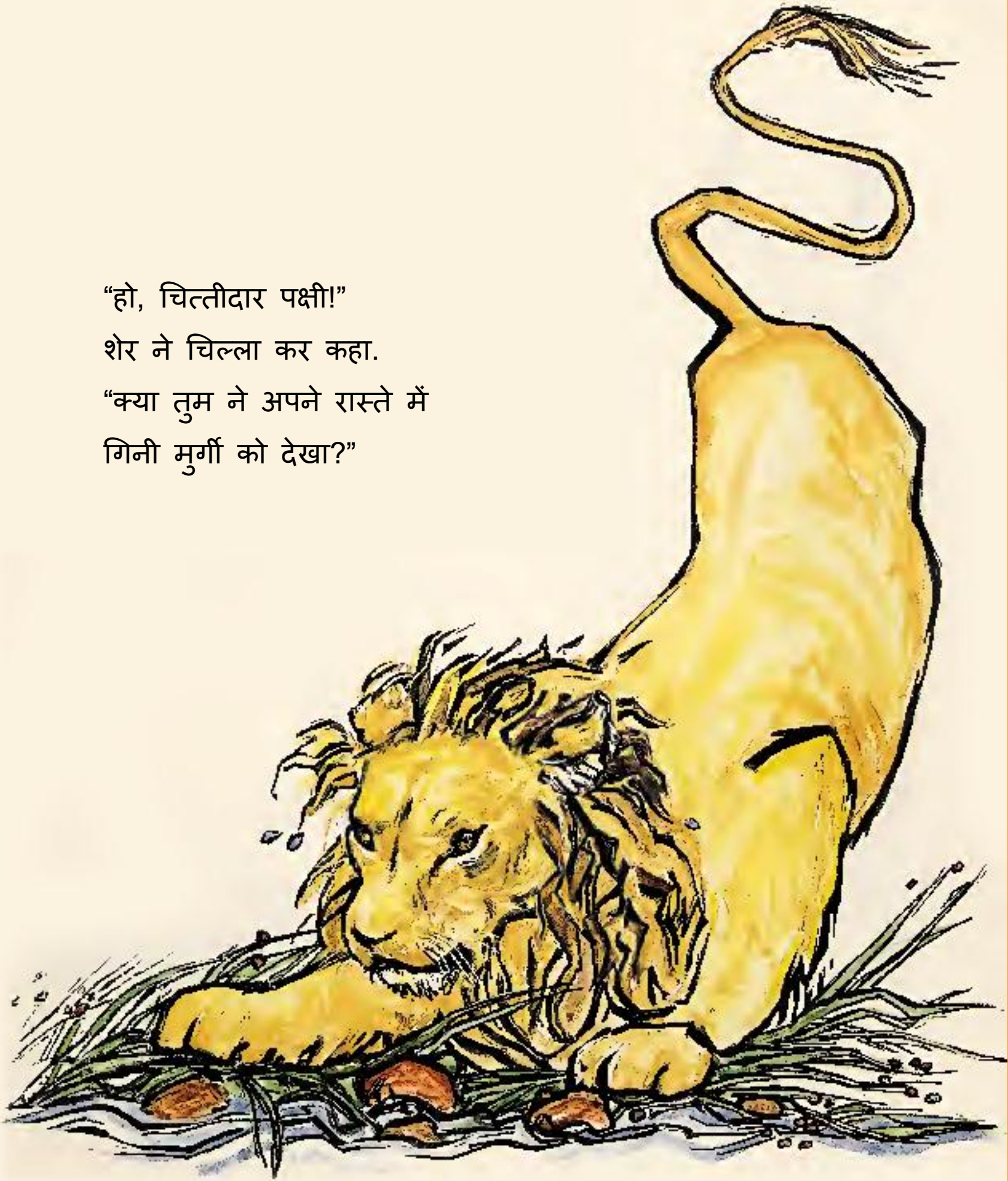
“ओह हाँ,” अपनी हँसी छिपाते हुए न्गन्गाह बोली.
“मुझे लगता है कि वह उस ओर गई है.”
उसने अपने चित्तीदार पँख से दूर
पहाड़ियों की ओर संकेत किया.
“अगर आप जल्दी-जल्दी जायें और
आराम करने के लिए कहीं न रुकें तो
आप कुछ दिनों में उसे पकड़ लेंगे.”

शेर झट से कूदा,
उस अनोखे पक्षी का उसने धन्यवाद भी न किया.

एक मिनट बाद उसके मन में
विचार आया कि उस पक्षी को रास्ते में
खाने के लिए पकड़ लेना चाहिए. लेकिन
जब मुड़ कर उसने नदी के किनारे को देखा
तो उसे पक्षी का चिह्न भी दिखाई न दिया.

“घास और छाया में छिपने के लिए
यह सुंदर चित्तियाँ बहुत काम की हैं!”
न्गन्गाह ज़ोर से हँस दी. वह तो
वहीं थी जहाँ शेर उसे छोड़ गया था.

और वह वापस चल दी,
गाय के घर की ओर,
अपने मित्र का फिर से
धन्यवाद करने के लिए.

समाप्त